केरल का त्योहार–विषु

प्रीती उदयभानु

कुशल सहायक कर्मचारी, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन, केरल

केरल में फसल कटौती का त्योहार 'विषु' अप्रैल महीने में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। विषु सौभाग्य एवं अच्छी किस्मत के आगमन का प्रतीक माना जाता है। यह त्योहार न केवल केरल में ही नहीं बल्कि भारते के कई हिस्सों में अलग – अलग नामों से खेतीबारी के त्योहार के रूप में मनाया जाता है। किसानों के लिए यह त्योहार बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दौरान नई फसलों की बुवाई होती है वहीं लोग अपनी अच्छी फसल के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। विषु पर्व के पहलुओं में से एक है 'विषुकणी'। अप्रैल महीने में अमलतास वृक्ष पीले फूलों से ज़्यादा खिलता है। अंग्रेज़ी में इसे गोल्डन शवर ट्री और मलयालम में कणिकोन्ना कहते हैं। विषुकणी की तैयारी एक रात पहले शुरू हो जाती है। इसमें कणिकोन्ना का महत्वपूर्ण स्थान है। रात में ही पूजा घर में चावल, अनाज, खीरा- ककड़ी, कटहल, नारियल, आम, पान के पत्ते जैसी चीज़ों को एक शीशे के साथ पीतल के बर्तन में सजाकर रखा जाता है। फिर घर के सदस्य सुबह उठने के बाद इन सभी चीज़ों का दर्शन करते हैं। 'विषुकणी' का दर्शन अगले एक वर्ष के लिए ऐश्वर्यदायक माना जाता है। इस दिन घर का बुज़ुर्ग व्यक्ति बच्चों को आशीर्वाद के रूप में पैसे देता है और सभी नए कपडे पहनते हैं। वास्तव में, विषु पटाखों का त्योहार भी है। बच्चे पटाखे और फुलझडियां फोड़कर खुशियां मनाते हैं। संस्कृति और सभ्यता से जुड़े ऐसे त्योहार जनता के मन में एकता का संदेश फैलाते है।

कणिकोन्ना फूल